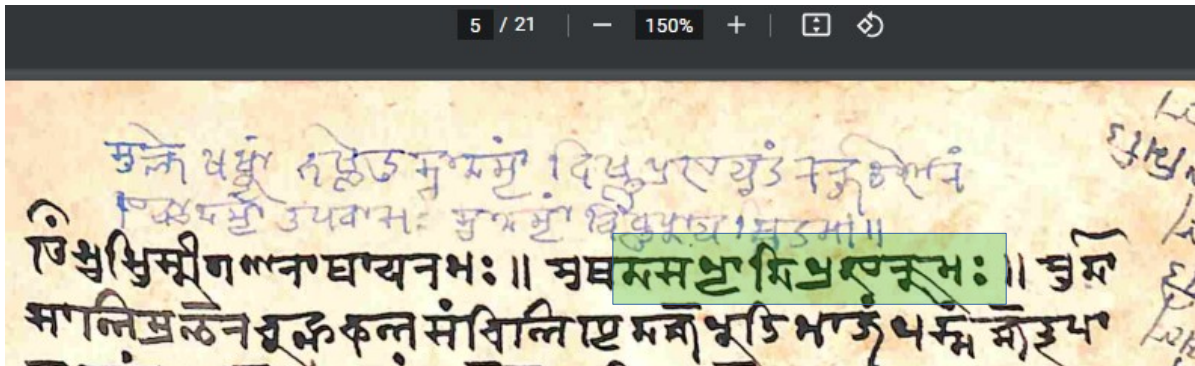


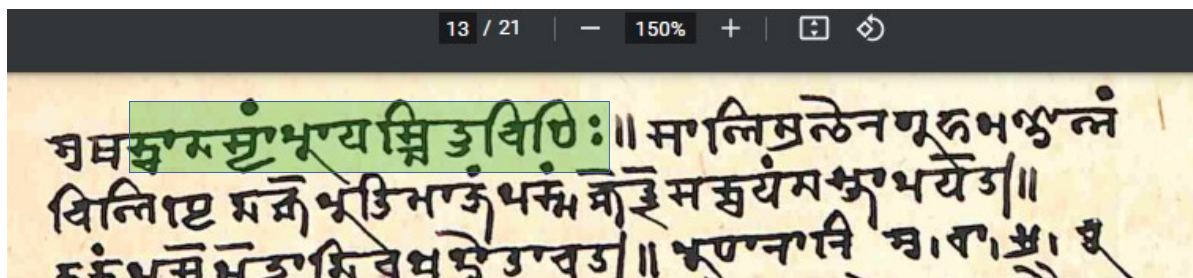
This Manuscript includes,

Dashamyadi Puja Krama - Dvadshyam Prayashchitta Vidhi

Pages 5 – 12 : Dashamyadi Puja Krama



Pages 13 – 20 : Dvadshyam Prayashchitta Vidhi







मन्दैव वज्रगलिः प्रोक्तुः । उक्तं सुमधुरं एव मन्दपदं पचकं  
 ननु किल नमः । नदमाभयवत्तमः मम ह्येव मन्दपदं च म्निताम् ।  
 एकाग्रं मन्दं क्रिया पूर्ति विपत्तं मम ३ पिप्लुः । सुमहो  
 वज्रमूर्च्छा मन्दगलिः । इत्येवमहो नमस्तस्मै ॥

ममता ॥

निधमिड विष्णुमूर्च्छा ह्येव प्रोक्तुः सुमहो । उक्तं सिद्धिदम्  
 विष्णुमूर्च्छा नदकं मितीचिने एव कदापि । प्रोक्तं हिन्दुका  
 सुमहो । उक्तं प्रोक्तं चिने सुमहो सुमहो । प्रोक्तं हिन्दुका  
 सुमहो । विष्णुमूर्च्छा ह्येव प्रोक्तुः सुमहो । प्रोक्तं हिन्दुका  
 सुमहो । उक्तं प्रोक्तं चिने सुमहो सुमहो । प्रोक्तं हिन्दुका  
 यमि मन्त्रात् नरे सुमहो । उक्तं प्रोक्तं चिने सुमहो । प्रोक्तं हिन्दुका



[illegible]

1221  
 1222  
 1223  
 1224  
 1225  
 1226  
 1227  
 1228  
 1229  
 1230  
 1231  
 1232  
 1233  
 1234  
 1235  
 1236  
 1237  
 1238  
 1239  
 1240  
 1241  
 1242  
 1243  
 1244  
 1245  
 1246  
 1247  
 1248  
 1249  
 1250  
 1251  
 1252  
 1253  
 1254  
 1255  
 1256  
 1257  
 1258  
 1259  
 1260  
 1261  
 1262  
 1263  
 1264  
 1265  
 1266  
 1267  
 1268  
 1269  
 1270  
 1271  
 1272  
 1273  
 1274  
 1275  
 1276  
 1277  
 1278  
 1279  
 1280  
 1281  
 1282  
 1283  
 1284  
 1285  
 1286  
 1287  
 1288  
 1289  
 1290  
 1291  
 1292  
 1293  
 1294  
 1295  
 1296  
 1297  
 1298  
 1299  
 1300  
 1301  
 1302  
 1303  
 1304  
 1305  
 1306  
 1307  
 1308  
 1309  
 1310  
 1311  
 1312  
 1313  
 1314  
 1315  
 1316  
 1317  
 1318  
 1319  
 1320  
 1321  
 1322  
 1323  
 1324  
 1325  
 1326  
 1327  
 1328  
 1329  
 1330  
 1331  
 1332  
 1333  
 1334  
 1335  
 1336  
 1337  
 1338  
 1339  
 1340  
 1341  
 1342  
 1343  
 1344  
 1345  
 1346  
 1347  
 1348  
 1349  
 1350  
 1351  
 1352  
 1353  
 1354  
 1355  
 1356  
 1357  
 1358  
 1359  
 1360  
 1361  
 1362  
 1363  
 1364  
 1365  
 1366  
 1367  
 1368  
 1369  
 1370  
 1371  
 1372  
 1373  
 1374  
 1375  
 1376  
 1377  
 1378  
 1379  
 1380  
 1381  
 1382  
 1383  
 1384  
 1385  
 1386  
 1387  
 1388  
 1389  
 1390  
 1391  
 1392  
 1393  
 1394  
 1395  
 1396  
 1397  
 1398  
 1399  
 1400  
 1401  
 1402  
 1403  
 1404  
 1405  
 1406  
 1407  
 1408  
 1409  
 1410  
 1411  
 1412  
 1413  
 1414  
 1415  
 1416  
 1417  
 1418  
 1419  
 1420  
 1421  
 1422  
 1423  
 1424  
 1425  
 1426  
 1427  
 1428  
 1429  
 1430  
 1431  
 1432  
 1433  
 1434  
 1435  
 1436  
 1437  
 1438  
 1439  
 1440  
 1441  
 1442  
 1443  
 1444  
 1445  
 1446  
 1447  
 1448  
 1449  
 1450  
 1451  
 1452  
 1453  
 1454  
 1455  
 1456  
 1457  
 1458  
 1459  
 1460  
 1461  
 1462  
 1463  
 1464  
 1465  
 1466  
 1467  
 1468  
 1469  
 1470  
 1471  
 1472  
 1473  
 1474  
 1475  
 1476  
 1477  
 1478  
 1479  
 1480  
 1481  
 1482  
 1483  
 1484  
 1485  
 1486  
 1487  
 1488  
 1489  
 1490  
 1491  
 1492  
 1493  
 1494  
 1495  
 1496  
 1497  
 1498  
 1499  
 1500  
 1501  
 1502  
 1503  
 1504  
 1505  
 1506  
 1507  
 1508  
 1509  
 1510  
 1511  
 1512  
 1513  
 1514  
 1515  
 1516  
 1517  
 1518  
 1519  
 1520  
 1521  
 1522  
 1523  
 1524  
 1525  
 1526  
 1527  
 1528  
 1529  
 1530  
 1531  
 1532  
 1533  
 1534  
 1535  
 1536  
 1537  
 1538  
 1539  
 1540  
 1541  
 1542  
 1543  
 1544  
 1545  
 1546  
 1547  
 1548  
 1549  
 1550  
 1551  
 1552  
 1553  
 1554  
 1555  
 1556  
 1557  
 1558  
 1559  
 1560  
 1561  
 1562  
 1563  
 1564  
 1565  
 1566  
 1567  
 1568  
 1569  
 1570  
 1571  
 1572  
 1573  
 1574  
 1575  
 1576  
 1577  
 1578  
 1579  
 1580  
 1581  
 1582  
 1583  
 1584  
 1585  
 1586  
 1587  
 1588  
 1589  
 1590  
 1591  
 1592  
 1593  
 1594  
 1595  
 1596  
 1597  
 1598  
 1599  
 1600  
 1601  
 1602  
 1603  
 1604  
 1605  
 1606  
 1607  
 1608  
 1609  
 1610  
 1611  
 1612  
 1613  
 1614  
 1615  
 1616  
 1617  
 1618  
 1619  
 1620  
 1621  
 1622  
 1623  
 1624  
 1625  
 1626  
 1627  
 1628  
 1629  
 1630  
 1631  
 1632  
 1633  
 1634  
 1635  
 1636  
 1637  
 1638  
 1639  
 1640  
 1641  
 1642  
 1643  
 1644  
 1645  
 1646  
 1647  
 1648  
 1649  
 1650  
 1651  
 1652  
 1653  
 1654  
 1655  
 1656  
 1657  
 1658  
 1659  
 1660  
 1661  
 1662  
 1663  
 1664  
 1665  
 1666  
 1667  
 1668  
 1669  
 1670  
 1671  
 1672  
 1673  
 1674  
 1675

॥ ॐ नमो ॥

ममिलको  
पुनपरोदना  
वमपरोदना  
ममिल

ममो

CC-0. In Public Domain.

Digitized by eGangotri

Handwritten text in Devanagari script, likely a signature or name, appearing as "महाराज" (Maharaja).

संस्कृत-शुद्धभाषा





॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 उक्तं भगवत्पुत्रेण श्रीकृष्णं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पिंडवि ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 पिंडवि ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 मिमेव ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 पुण्य ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 भोगनिष्ठ ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 भगवत्पुत्रेण ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 लभ्यते ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 जीवन्मुक्ता ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 गच्छन्ति ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 समीप ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 यत्न ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 निदि ॥ ३ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



सं ५४ भाभनंनमः॥ भक्तगणपतये वन्द्यमेव मेधसा, उ  
 सं युधामन्युः प्रण ॥ भक्तभूमीसः यद्भुजं भान, उ ५४ पाडिं वन्द्य  
 म्वं, उ, भक्तगणपतिं क्वणी ७ मेधसायिनं, उ सं सुवन्द्य  
 विष्टमि वि सुवन्द्य ॥ यवत्रिकीद, सुवन्द्य सुभरवन्द्य  
 डि ॥ कणवन्द्य सुगीकम् ॥ मत्रे मेवीः लक्षणम् १७७ वन्द्य सुदि  
 रष्टवन्द्य ५४ डिभाष्टमि भान्नुम ५३ः सुकड्यम् ॥ ५३  
 नुल्लेधनम् ॥ वसुगन्धुपुष्पप्रपत्ति भक्तभारकम् सुगन्धु  
 मीनि ॥ ५३ मन्दि ७७ भक्तभक्तम् ॥ ५३ मन्दि ७७ सुगन्धु  
 सुधमन्दिन सुगन्धु भक्तभक्तम् ५३ः सुगन्धु सुगन्धु  
 भीष्ट ॥ भक्तभक्त सुगन्धु, पि ५३ विष्टमि सुगन्धु  
 सुगन्धु. सुगन्धु सुगन्धु ॥ ५३ः सुगन्धु सुगन्धु, सुगन्धु  
 सुगन्धु सुगन्धु सुगन्धु ॥ सुगन्धु सुगन्धु सुगन्धु सुगन्धु

५५: मित्रिभंका ह्वाह्वा ॐ मित्रिभंका ह्वाह्वा  
विष्णुभंका ह्वाह्वा ॐ विष्णुभंका ह्वाह्वा  
मित्रिभंका ह्वाह्वा ॐ मित्रिभंका ह्वाह्वा  
विष्णुभंका ह्वाह्वा ॐ विष्णुभंका ह्वाह्वा

ॐ श्री गुरुभ्यः नमः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri





सुक्रानं नभेवक्रल ॥ उतेवक्रलयपुडिमंमहृत्त भा  
 विडालि सुक्र ॥ क्वानी ॥ सुईने पिडचिष्टेः भभसुपुडविष्णु  
 नभडीउ विष्णुभायुष्टुं वाममेवाय उभं विष्णुपुडिमं  
 भानं भममिं ॥ भवभुभामस कइ सु रि क क क उ कृ प  
 कालयुक्तं विष्णुपुथायवक्रलयममनि ३ पुडिगल्ला  
 मि ॥ उतमेवतः ॥ उतः प्रचवसुक्रलयसिक्तं सुः भममभिष्ट  
 मि सुक्र सुप्रेदविष्णुष्टेडि पिडचिष्टे रिष्टमि भभसुपुड  
 सुडीउवउभानः सुप्रेदविष्णुवक्रलयरणनभमिक्तुमसु ॥  
 सुप्रयधिसुक्तुभुक्त विभाङ्गेभि नयामि एमंमेदि क  
 गवष्टुक्र य क मिड गेणभममि ॥ कल्लसष्टासिक्तं ॥  
 गायष्टेनभः ३ सुक्र भकगल्लपतः क्वष्टः ७ वाममे

वसुधा कृत्य उत, उ, सं, सुद्धने, पि (उचिष्ठे गिष्टमि भमसुपु  
 उचिष्ठे न भजी उवउभान. धष्टु नकुवउनि. कल्लसयु. क्रो  
 इस्वप्र. ससिष्ठं ॥ यवेसकं ॥ सुल्लं भमी ॥ सुभने मि रंसा  
 न कल्लिकल्लध ॥ मभसं सुद्धने न भवेकल्ल उमकल्ल  
 सं भद्राङ्गः ॥

यमसु भेष्टु भनतु भद्रये भद्रये सुद्ध भये भनउतम  
 वमति यं वै पुनयं पुनयं उं वसुमेवं सगलं पुनये ॥ ० ॥  
 योगीश्वरं सगल विमिष्टभेनिं श्लेयं सगलं पुनये पमसुम  
 मोहसु भद्रु पुनयं वंशं उं वसुमेवं सगलं पुनये ॥ ३ ॥  
 कृष्णसु भद्रु भमिष्टु पुनयं सगलं कृष्ण भद्रु भयेम  
 युगात् सगलं पुनयं पुनयं उं वसुमेवं सगलं पुनये ॥ ३ ॥

ममसुखं भूयस्मि उविधिः ॥ मालिप्तलेन गुरुमभ्युत्तं  
 विलिप्तं मन्त्रे भूतिभावं भस्मं क्रैत्रं मस्यं मभ्युत्तं ॥  
 कर्मभूते मन्त्रे मिव धनुः उच्यते ॥ भूतानि च। वा। अ। व।  
 व। क्रै ॥ उच्यतेः कर्मभूते, उ। भूतानि उच्यते ॥ उच्यते नमः  
 भूतिभाकमभ्युत्तं उच्यतेः मेषसा ॥ भनः कल्लसे येन मन्त्रे उच्यते  
 मि भास्वाय उच्यते मेषसा ॥ उच्यते भूतानि मि त्रै मन्त्रे उच्यते  
 वज्रं नैवेद्यं, निरुद्धं गुरुः उ च्यते मन्त्रे ॥ उच्यते मन्त्रे भूतानि  
 भास्वाय उच्यते मेषसा ॥ उच्यते मन्त्रे भूतानि मि त्रै मन्त्रे उच्यते  
 मेषसा उच्यते मेषसा भास्वाय उच्यते, उच्यते मन्त्रे भूतानि  
 मि उच्यते मन्त्रे भूतानि मि त्रै मन्त्रे उच्यते ॥

कवानी



मडीउ वडुमाय ठविष्टु डुने ममवेप  
 मयविष्टु डुने मममुपुडविष्टुने डुमीपकम  
 ममिपडय मममुन

महेन महुड ठवानी पिरिविष्टुवे डट मिप्रपेनमः मीपेनमः  
 महुड ठवानी मंदः म/ए मसिनेः। उयेरसुट्टमः॥ उः प/कु॥ कुः पुनय मि  
 टुमि कभुमेवमुड, भकगलपडः मप्रेः उ ठवट्टः उ पाडुय  
 उनमेवडनं उकुष्टवमुकुष्टुट्टमि उणमु ममुष्टु सुनेने.  
 मिउचिष्टे गिट्टमि मममुपुडविष्टुनभा मडीउवडुभान. वि  
 भुवलि विणनउं विष्टुपुय म्मिडनिभिडं विष्टुप्र. कल्लम  
 प्र. मधमगयेप्र. मिकल्लप्र. गदमडुलप्र. उ मं प्र. सुमम  
 डं॥ एवमभनगमि ममि उं विष्टुप्रणनं उदण॥ उडेकय  
 म॥ उमेकल्लमे मपमहेन महुड मममुभाउ. कल्लमभीटा॥  
 महेन महुड ठवानी, पिउचिष्टे गिट्टमि मडीउवडु, कल्लमभी  
 टु॥ उः पुडिमायग्ग महुड ठवानी मममुभाउ विष्टुभी

५॥ भनः कणवठवड, गीवठुड। महु क्वानी पि। इचिष्ठे रि  
 दुमि मगीउवउभान। विष्ठुतलि विणनऊं महुष्टा विष्ठुभूयस्मि  
 इनिभिउं विष्ठुभीष्टा ॥ उरामळो भूरीउभुमा ॥ उचिष्ठेः भूडिमा  
 यंकल्लमेस ॥ उउेप्रिकम् ॥ पण्डेडिल्लेष्टामि, सुमेभाऊ ॥  
 उउरउः भंभील्ले, मप्रभमरे, भाविडालि मप्रये ७ शांभुनि.  
 मप्रमरे भद्रगल्लपउये क्वण्टे ७ वाम, पाऊयउन, उचि  
 मिहः उ, मं शांभुनि ॥ एवं भूकुभि सुयेरेव ॥ भाउगलिम ॥  
 सुष्टाममनभा सुद्धने, पि। इचिष्ठे रिष्टामि भमभु मगीउवउ,  
 विष्ठुभूयस्मि इनिभिउं भद्रगल्लपउये मप्रये ७ क्वण्टे ७  
 वाममेवय, उ पाऊयउनमे, उचामिहः उ मं मप्रयेव  
 सानराय उमभण्टं ॥ सुष्टाकगाने ऊमां ऊमां ऊमां

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कलमं मरुद्ग, उरोगेभिः सप्रथमकल सप्रयेभ्यः ॥ उते  
 वदेमः विरुद्धमि, निधुमीमिडि वधसुतावड भूणननि  
 उडिडिडिः वधुमेवय, ड, भाडाड, उडुयतु ७ ववने ७ ये  
 रुमे ववयमेवयेडमि यउडकु ॥ उडुपचउडमि लेकुप्र  
 भा ॥ एवभासुदेमः ॥ उडुलं, मुनेनभतु पि उचिल्लेगिडमि  
 नागयल्लवलि विणनऊं भधुं विमुभायसिडनि, भक  
 गल्लभडिः वधुमेवः उ ववमेव उडमि उडुमयः उरः  
 मल्लः मुत्राडु कडिडिः भीयडं ॥ उते विमुभाडुकेडुड उड  
 ल्लभा ॥ उतेयवडिल्लदेमः ॥ भक विरुभडि, सप्रयेभ्यः क गय  
 डीरुडुलं कडु उडल्लभा ॥ सप्रदेयभिडमिवधसुतावड ॥  
 मुनेन पि उचिल्लेगिडमि भक गल्लभडिः कुभगः पिडगल्ल



CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वा मङ्गलं

शिठिपुमिडि, ० धयसुउपडुडि वैसुनरीये लउदलम मनेन.  
 मि। जचिह्ले: मभमुपुउविपुनगभीउवउभन, नगयललरलि  
 विण्णजुमभुष्टं विपुभूयसिउनिभिउं, चमि: प्रीयउमिह  
 मि॥ कउमेकलं देवे चप्रेडहमिप्रलभुभा उउप्रेदविपुव  
 लप्रणनभा॥ जिउ: भुरुमभिहमि नमेभननुयेहमि, भा  
 गुल्ले उमिमवयविह्ले ३ कभुगय ३ अदउपाय ३ येनीसुग  
 य ३ नमेणम ३ अलि: अद ३ चप्रे कवानी ३ चप्रेदविपुभु. क  
 भमेवभु ३ उइने पि। जचिह्ले गिहमि मगीउ. चप्रेदविपुभु  
 कलप्रणन, गनुअधुमिमिहमि लउभा लउमेवउविन  
 उउ: कउमेवलि: येभिप्रिवमडि॥ भउिमय चमिह्ले ॥  
 जिउ: भुरुमभिहमि चप्रे कवानी कभमेवभु ३ उइनेवे. पि

उचिष्ठे रिटमि चगीउवउभान. चमृष्टं विष्णुभयस्त्रिउनिभिउं  
 विष्णुभुडिभयाननभस्त्रिउं॥ सुभवेभि उयः भवेडि सुकानं नमे  
 इकले॥ उडि विष्णुभुडिभं भुडिभयान॥ भविहलि चहु कवानी  
 सुइनेव॥ पिउचिष्ठेः भभमुष्टविष्णुभगीउवउभान. चमृष्टं  
 विष्णुभय. विष्णुभयसुष्टं भिभं विष्णुभुडिभं भानं. विष्णुभय  
 सुकल्लयममनि ३ एउमेवउः प्रचवकुल्लुकिरुभा ५  
 लंमडा सुयुधं विभसुनयमि भनः परिमप्रह ७ वेसुमेवमि  
 नेगुभाभि. उउः कल्लसास्त्रिउभा गयहेनमः ३ सुमिमेवय ३  
 चहु कवानी भकागल्लभउः सुयः ७ कवः ७ वामुमेवमीनं  
 चरुयकुनी उकुष्टेहमि उ मं सुइनेव॥ पिउचिष्ठेगीउ.  
 चमृष्टं विष्णुभय. कल्लसप्र. मेइसुगप्र. चस्त्रिउमसु ॥

वामुमेव  
 य

भिकलप्र. १०८५५५५.



सुखं सुपत्रिभिः संमन कलिकलध सुखं सुयुक्तं सुभयं सु  
दानं नमोऽस्तु ॥ समकलमं भवतु ॥ ५३ ॥ भयसिद्धिः ॥

